सम्पादकीयम्

हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ आपके करकमलों में इस षाण्मासिक रिसर्च जर्नल को सौंपते हुए इस आशा के साथ कि वेद एवं वैदिकवाङ्मय में निहित ज्ञान व विद्यारत्न-रूपी विभिन्न लेखों से गुम्फित यह जर्नल परम सहायक होगा पाठकों के विद्यावैभव की श्रीवृद्धि करने में। महर्षिपतञ्जलि के महाभाष्य में **एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति** यह एक ऐसी अमर उद्घोषणा है, जहाँ उन्होंने एक-एक शब्द के महत्त्व को समझना एवं प्रयोग करना जीवन में कामधुक् का स्वरूप बताया है। महर्षिपतञ्जलि के इस आर्ष एवम् आप्तवाक्य में प्रत्यक्षतः मीमांसकों की बड़ी गम्भीरता निहित है, जहाँ उन्होंने वेद के अपौरुषेयत्व नामक सिद्धान्त को सतर्क प्रतिपादित किया है। वेद की सम्पूर्ण राशि अपौरुषेय है, यह मीमांसकों का और प्रायः सम्पूर्ण वैदिक मनीषा का निश्चित सिद्धान्त रहा है। **यूथपरिभ्रष्टगवादिन्याय** से वेदों के संहिता-स्वरूप उत वा प्रकीर्ण-रूप में विद्यमान वेद का कोई भी पद अपौरुषेयत्व का निर्वहन करता है। अतः मीमांसकों ने तो वेद को धर्मप्रतिपादक सञ्ज्ञक मानते हुए वेदराशि को संशय, मिथ्यात्व इत्यादि से सर्वथा दोषराहित्य हेतु से अपौरुषेय स्वीकार किया है, इसलिए उन्होंने शब्द, अर्थ तथा दोनों के प्रगाढ़ सम्बन्ध को नित्य माना है। प्रायः यह सभी वैयाकरणों एवं नैरुक्तों का अभिमत रहा है।

हमें महाभाष्यकार द्वारा व्यक्त प्रत्येक शब्द के गहन माहात्म्य को समझते हुए उसमें निहित सार्थकता को हृदयङ्गम करना तथा उसका जीवन में आचरण करना ही शब्दार्थ-रहस्य सिद्धि है। शब्द चूँकि अमूर्त तत्त्व है, असीम है, अमर एवम् अजर का भाव अपने में सन्निविष्ट करके रखना उसका अपना चमत्कार व वैभव है, अतः इसका सम्मान तथा औचित्य अवश्यम्भावी है। शब्द साधक की साधना ही उस प्रत्येक दृष्टिकोण से बोधार्थ प्रेरित करती है समस्त वेदविद्या विहित लेखों को, उन्हीं लेखों का एक ज्ञानगुच्छ आपके हस्तगत है। विद्वान् मनीषी लेखकों ने अनेक ग्रन्थों के अध्ययन, मनन एवं स्वात्म चिन्तनपुरस्सर जो भी अपने लेखों को सँजोया है, यह उनकी प्रातिभ प्रस्तुति है, लेकिन मेरा मानना है कि लेख-निबद्ध एक-एक शब्द को पढ़ें एवं गहनता से विश्लेषण करें कि वस्तुतः महर्षि पतञ्जलि का उपर्युक्त वाक्य जीवन में कितनी सार्थकता का निर्वहन करता है, इसलिए स्वाध्याय एवं चिन्तन परम ज्योति अथवा परम औषधि है अज्ञानरूपी तिमिर को ध्वस्त करने की।

लेखों की भाषा कोई भी हो सकती है, चूँकि भाषा तो ज्ञान सम्प्रेषण की सशक्त अभिव्यक्ति है। एक मनीषी लेखक ने शोधलेख में जो भी अपने विचार प्रस्तुत किये अथवा

गूँथे हैं उनका आन्तरीय स्वरूप ही कामधुक् है। इस अङ्क में भी विभिन्न विषयों पर कई लेख हैं जो ज्ञानोत्कृष्टता के हेतु हैं, वह पाठकों के लिए एक प्रभूत सामग्री भी है। हमारा प्रयास है कि वेदविद्या अथवा वेदज्ञान को आप तक और अधिक उत्कृष्टता के साथ पहुँचाया जाय। अनेक स्थलों पर लेखकों एवं पाठकों अथवा हमारे भी विचारों में मतवैभिन्य सुतरां सम्भव है, किसी वाद, दुराग्रह अथवा इति वा एवं से ऊपर उठकर विचारकर लाभ लेना परम ध्येय होना चाहिए। अधिकांश मामले में स्व-वाद अथवा दुराग्रह विद्या के क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा चिन्तन एवं मनन को रोकता है, परन्तु रुक जाना एक जिज्ञासु का लक्ष्य नहीं है, सतत ज्ञान की बुभुक्षा एवं तितिक्षा ही ज्ञानोदात्तत्व प्रदान करने में दिशाबोधक है।

मैं इस अङ्क में प्रकाशित लेख के सभी विद्वान् लेखकों का साभिनन्दन आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके विचारों का ज्ञानगुच्छ सप्रयास सभी के करकमलों तक पहुँचा पाये हैं और हमारा यह भी प्रयास रहता है कि लेख पुनरावृत्ति से सर्वथा परे रहें, साथ ही गुणवत्ता सम्पृक्त उतने ही खरे हों। जिन लेखकों के शोधलेख इस अङ्क में प्रकाशित हुए हैं, वे निश्चय ही बधाई एवं साधुवाद के अधिकारी हैं, जिनके लेख इस अङ्क में किसी कारणवश प्रकाशित नहीं हुए हैं, उन महानुभावों से अनुरोध है कि प्रेषित अपने लेखों को सप्रमाण उत्कृष्टता एवं सटीक सूचना-प्रधान बनाने पर अवश्य ध्यान रखें । लिखते रहना निश्चय ही सफलता की कसौटी है और इस कसौटी में आप दक्ष हैं, इस आशा एवम् अभिलाषा के साथ आप सभी विद्यानुरागी पाठकों के सुझावों का सदा स्वागत, ताकि इसे और उदात्त मानकों वाला बनाने में हम प्रतिबद्ध हो सकें।

प्रो. रूप किशोर शास्त्री
सचिव
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, उज्जैन